तुलसीकृत कवितावली में वस्तु वक्रता का सौंदर्य

डॉ. गजेन्द्र मोहन,

सह आचार्य–हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, नसीराबाद (अजमेर)

कवि कौशल एवं कला की प्रतिष्ठा के रूप में वक्रोक्ति सिद्धांत को काव्यशास्त्र में स्थापित करने का श्रेय आचार्य राजानक कुंतक को दिया गया है। वक्रोक्ति का व्यापक अर्थ ग्रहण करते हुए कुंतक ने इसे काव्य की आत्मा स्वीकार किया है, तथा ' वक्रोक्ति काव्य जीवितम ' का प्रतिपादन किया है। इसके कलागत ढांचे को स्पष्ट करते हुए आचार्य कुंतक ने सिद्धांत के अंतर्गत वर्ण चमत्कार, शब्द सौंदर्य, विषय वस्तु की रमणीयता, अप्रस्तुत विधान, प्रबंध कल्पना आदि समस्त काव्यांगों को प्रस्तुत किया है। तुलसीदास कृत कवितावली का वक्रोक्ति के भेदों के आधार पर यदि अध्ययन किया जाए तो उनके सभी काव्य ग्रंथों के साथ साथ कवितावली में भी वक्रोक्ति के सभी भेदों को देखा जा सकता है।

वर्ण से पदों का निर्माण होता है तथा पदों का समूह वाक्य कहलाता है । वाक्य ही वाच्य वस्तु है। वस्तु से अभिप्राय वाच्य अर्थात वर्णनीय विषय जो कि वाक्य वक्रता का प्रतिपाद्य होता है। वाक्य या वस्तु वक्रता के बारे में कुंतक का मत है कि :

" उदार स्वपरिस्पंद सुंदरत्वेन वर्णनम।

वस्तुओं वक्र शब्देक गोचर त्वेन वक्रता।।

अपरा सहजाहार्य कवि कौशल शालिनी।

निर्मितर्नूनोल्लेख लोका तिकांत गोचरा ।।1

अर्थात वस्तु का उत्कर्षशाली स्वभाव से सुंदर रूप में केवल सुंदर शब्दों द्वारा वर्णन अर्थ या वस्तु की वक्रता कहलाती है। यह दो प्रकार की होती है सहजा तथा आहार्या । कवि की स्वाभाविक निपुणता से शोभित रहने वाली सहजा वस्तु वक्रता तथा अपूर्व वर्णन के कारण लोकोत्तर विषय का निरूपण करने वाली आहार्या वस्तु वक्रता कहलाती है ।

सहजा वस्तु वक्रता : सहज शोभा में वस्तु का प्रकृत वर्णन रहता है अतः सहजा नामक वस्तु वक्रता से अभिप्राय रमणीय स्वाभाविक सौंदर्य के वर्णन से है ।वस्तु का इतिवृत्त कथन स्वाभाविक वर्णन नहीं है अपितु विशिष्ट वस्तु दर्शन में ही इसकी रमणीयता सन्निहित रहती है। कुंतक सौंदर्य को वस्तु परक तथा आत्मपरक दोनों दृ ष्टियों से देखते हैं। जहां वे भाव की सहज रमणीयता को स्वीकार करने की बात करते हैं वहीं कवि व्यापार को समस्त वांग्मय के प्राणभूत साहित्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। कंटक रस स्वभाव एवं अलंकार सबके सौंदर्य का प्राणभूत कवि कौशल को ही स्वीकारते हैं :

" रस स्वभावालंकार सर्वेषाम कवि कौशल मेव जीवितम ।" 2

तुलसीदास एक विद्वान कवि थे उनको कवि कौशल का संपूर्ण ज्ञान था। वे जानते थे कि श्रेष्ठ काव्य कवि कौशल के औचित्यपूर्ण प्रयोग पर ही निर्भर करता है, इसीलिए कवितावली में सहजा वस्तु वक्रता का सौंदर्य अनेक स्थानों पर बिखरा पड़ा दिखाई देता है : **" महाराज बलि जाऊं राम ! सेवक सुखदायक। महाराज बलि जाऊं राम ! सुंदर सब लायक ।। महाराज बलि जाऊं राम ! सब संकट मोचन ।महाराज बलि जाऊं राम ! राजीव लोचन ।। 3**

उपर्युक्त पद में तुलसीदास राम पर न्योछावर होने के भाव को उनके सर्वगुणों और भावों के आधार पर प्रस्तुत करते हैं तथा रामनाम

का प्रभाव और पर्याय दोनों ही सहज रूप में गिना देते हैं । इसलिए सहज और स्वाभाविक वर्णन होने के कारण यहां सहजा वस्तु वक्रता का भाव है।

इसी प्रकार शिव महिमा का एक सुंदर उदाहरण भी कवितावली में दिखाई देता है, जिसमें सहज और सरल रूप से शिव पर्यायों का उल्लेख करते हुए कवि ने भाव सिद्धि प्राप्त की है:

" भूतनाथ भयहरन भीम भयभवन भूमिधर

भानुमंत भगवन्त भूतिभूषन भुजंगबर

भव्य भाववल्लभ भवेस भव भार विभंजन

भारती बदन विष अदन सिव ससि पतित पावन नयन ।4

यहां शिव के सहज पर्यायों को गिनाते हुए तुलसीदास ने अपनी लक्ष्य सिद्धि सहज रूप से ही प्राप्त कर ली है । अतः यहां भी सहजा वस्तु वक्रता है क्योंकि कहीं भी कृत्रिमता का आभास नहीं होता है। इसलिए स्पष्ट है कि कवितावली में तुलसीदास न केवल अलंकारिक चित्रण अपितु भावसाम्य का संतुलन बनाए रखने के लिए प्रत्येक वस्तु का सूक्ष्मतम और स्वाभाविक चित्रण करते हैं । इसी से सामान्य विषय भी कभी कौशल से आश्रय प्रकार जीवंत हो जाता है।

आहार्या वस्तु वक्रता : कुंतक ने आहार्या वस्तु वक्रता को वाक्य वक्रता भी कहा है । उनका कहना है कि ''वाक्य वक्रता काव्य के सभी प्रसाधनों से परे एक अतिरिक्त काव्य सौंदर्य हुआ करती है। जिस प्रकार चित्र की मनोहरता फलक, रेखा एवं रंगकारी में न होकर चित्रकार के चित्रण कौशल में रहा करती है, वैसे ही काव्य की हृदयकारिता शब्द, अर्थ, गुण और अलंकार में न होकर कवि की निर्माण कुशलता में रहा करती है।5 एक ही वस्तु को भिन्न–भिन्न प्रकार से वर्णित करना ही कवि का आहार्य कौशल कहलाता है। कवितावली के संदर्भ में यदि हम देखते हैं तो तुलसीदास ने सहज अभिव्यक्ति की प्रतिभा के कारण ही कवि कर्म कौशल आहार्य अभिव्यक्ति की क्षमता भी प्राप्त कर ली थी। उनके काव्य का आधार आहार्य प्रतिभा ही है उदाहरण के तौर पर :

" रावनु सो राजरोगु बाढ़त विराट उर ,

दिनु दिनु विकल सकल सुख रांक सो ।।

नाना उपचार करि हारे सुर सिद्ध मुनि

होत न बिसोक, औत पापै न मनाक सो ।।6

यहां राजरोग और उसको दूर करने के लिए औषधि बनाना यह प्रस्तुत विधान है परंतु कवि ने इस पर अप्रस्तुत विधान दर्शाया है कि रावण राजयक्षमा जैसे असाधारण रोग के समान है जो विश्व के हृदय में बढ़ रहा है। सूर, नर, मुनि आदि सभी उपाय रुपी औषधि कर करके हार गए हैं। यहां प्रस्तुत का अप्रस्तुत विधान बहुत सुंदर रूपक की दर्शना करता है। एक और उदाहरण कवितावली में उपमानों की शोभा को द्विगुणित कर देता है :

" तुलसी मन रंजन रंजित अंजन ,

नैन सुखंजन जातक से ।

सजनी ससि में समसील उभै,

नवनील लिल सरोरूह से बिकसे ।।"7

यहां उपमेय और उपमान का अद्भुत सामंजस्य सादृश्य में दिखाई पड़ता है, जो निसंदेह तुलसीदास की ही विशेषता है इसके साथ ही साथ सांगरूपक और सावयव के श्रेष्ठतम उदाहरण भी कवितावली में विद्यमान है जैसे :

" दूलह री रघुनाथ बने, दुलही सिय सुंदर माही । गावती गीत सबै मिलि सुंदरी, वेद जुबाजुरि विप्र पढ़ाही।।

राम को रूप निहारती जानकी, कंकण के नग की परछाही।

यातें सबै सुधि भूल गई, कर टेकि रही पल टारति नाही।''8

यहां पर राम और सीता को आलंबन बनाते हुए सखियों और सुंदर स्त्रियों द्वारा गीतों का गाना वाद्य यंत्रों को बजाना, पाठ का उच्चरित होना श्रेष्ठ मर्यादित उद्दीपन सौंदर्य के चित्र हैं।

अलंकारों की दृष्टि से यदि देखा जाए तो कवितावली में तुलसी शैली का पूर्ण परिपाक हुआ है। सभी अलंकारों के प्रयोग में बार–बार वस्तु वक्रता की स्पष्ट छाया दिखाई पड़ती है। निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं :

अनुप्रास अलंकार : छोनि में न छाड़यो छपयो,

छोनिप को छोना छोटो,

छानिप – छपन बांको बियद बहुत हौ।। 9

यमक अलंकार – '' सीस बसे बरदा बरदानि , चढ़यो बरदा धरन्यो बरदा है ।।10

वक्रोक्ति अलंकार – को न क्रोध निरधवों काम बस केहि नहीं कीन्हो?

को न लोभ दृढ़ फांद , बाँधि त्रासन कर दीन्हो।''11

श्लेष अलंकार : '' नाना उपचार करि हारे सुर सिद्ध मुनि,

होत न बिसोक ,औत पापै न मनाक सो ।''12

वीप्सा अलंकार :'' हाथी छोरौ घोरा छोरौ , महिष वृषभ छोरौ,

छेरी छोरौ सोवै सो जगावो जागिरे ।''13

विरोधाभास अलंकार : देखें बर बाटिका तडाग बाग को बनाऊ ,

राग बस भे विरागी पवन कुमारु सो ।।''14

संदेह अलंकार : केधो व्योम वीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु, वीर रस वीर तरवारि सो उधारि है।''15

उत्प्रेक्षा अलंकार :'' मनहुं चकोरी चारु बैठी निज निज नीड़, चंद की किरन पीवें पलकौ न लावती।''16

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि तुलसीदास की कवितावली का आहार्या वस्तु वक्रता के परिप्रेक्ष्य में अनुशीलन यह बताता है कि चाहे उपमेय – उपमान संबंध हो या प्रस्तुत – अप्रस्तुत विधान या चेतन – अचेतन पात्र विधान या फिर अलंकार और भाव चित्रण सभी औचित्य की दृष्टि से आहार्या वस्तु वक्रता को पूर्णतया सिद्ध करने में सक्षम और प्रसंग के अनुकूल है । वस्तु वक्रता को दृष्टि में रखकर भी यह स्पष्ट हो जाता है कि सहज सौंदर्य तो उसमें सभी जगह प्रयुक्त किया ही गया है साथ ही साथ संपूर्ण शैलीगत प्रयोग इसे और भी आलंकारिक कर रहे हैं ।इसलिए कवितावली वस्तु वक्रता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध काव्य ग्रंथ है।

संदर्भ

1. हिंदी वक्रोक्ति जीवितम, आचार्य कुंतक 3ध्1–2.
2. हिंदी वक्रोक्ति जीवितम, आचार्य कुंतक, पृष्ठ 118
3. कवितावली,उत्तर काण्ड ,111
4. कवितावली, उत्तर काण्ड,152
5. हिंदी वक्रोक्ति जीवितम, आचार्य कुंतक, 3ध्3
6. कवितावली, सुंदरकांड, 25
7. कवितावली,सुंदर कांड, 78
8. कवितावली,बालकांड , 12
9. कवितावली, बालकांड, 18
10. कवितावली,उत्तरकांड, 155
11. कवितावली, सुंदरकांड , 50
12. कवितावली, सुंदरकांड, 25

13. कवितावली,उत्तरकांड, 115
14. कवितावली, सुंदरकांड, 19
15. कवितावली,उत्तरकांड, 105
16. कवितावली, बालकांड , 71

Copyright © 2017, Dr. Grjendra Mohan. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.